वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष:6 अंक: 20 | शुक्रवार 19 जून 2026 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

पंचम पुण्यस्मरण

स्व. श्री राजेन्द्र के. गोधा

संस्थापक, समाचार जगत

चले गए अपने घर से, पर दिल से दूर नहीं। रूखसत हुए दुनिया से,
लेकिन हम से दूर नहीं हम जब उन्हें याद करते हैं,
हमें अपने साथ होने का अहसास दिला जाते हैं।।

श्रद्धावनत

राकेश-समता गोदिका एवं समस्त शाबाश इंडिया परिवार

मोक्ष कल्याणक महोत्सव श्रद्धा एवं भक्ति के साथ मनाया गया

शाबाश इंडिया

श्री मुनिसुव्रतनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में देवाधिदेव 1008 श्री धर्मनाथ भगवान का मोक्ष कल्याणक महोत्सव श्रद्धा एवं भक्ति भाव के साथ मनाया गया। कार्यक्रम के अंतर्गत सर्वप्रथम प्रातःकाल 15वें तीर्थंकर देवाधिदेव 1008 श्री धर्मनाथ भगवान का पंचामृत अभिषेक एवं शांतिधारा सम्पन्न हुई। इसके पश्चात भगवान के मोक्ष कल्याणक के उपलक्ष्य में श्रद्धालुओं द्वारा निर्वाण लड्डू अर्पित किया गया। इस अवसर पर श्री मुनिसुव्रतनाथ दिगम्बर जैन पंचायत के संरक्षक विजय कासलीवाल, भागचंद बोहरा, मंत्री प्रदीप गंगवाल, कार्यकारिणी सदस्य सुरेश काला एवं जितेन्द्र पाटनी सहित समाज के अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे। इनमें विजय गंगवाल, प्रदीप बाकलीवाल, विजय जैन, पवन गोधा,

प्रेमचंद पाटनी, कैलाश गंगवाल, विपिन सोगानी, मनीष बड़जात्या, अभिषेक पाटनी, राजू कासलीवाल, गिगराज ठोल्या, मुकेश पापड़ीवाल, संजय छाबड़ा तथा महिलाओं में संगीता पापड़ीवाल, निर्मला बोहरा, बसंता गोधा, नयनतारा गोधा और पुष्पा बोहरा सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल रहे। इसी क्रम में श्री पद्मप्रभ जिनालय, मयूरा सिटी में भी देवाधिदेव 1008 श्री धर्मनाथ भगवान का मोक्ष कल्याणक महोत्सव श्रद्धापूर्वक मनाया गया। यहां भगवान को निर्वाण लड्डू अर्पित किया गया। इस अवसर पर प्रभारी राजेश पाटनी (मेड़ता), सुभाष सेठी, अजीत बाकलीवाल, अभिषेक पाटनी, सुनील बड़जात्या, जयकुमार बड़जात्या, नीरज बाकलीवाल, अनूप शास्त्री, अधीर छाबड़ा सहित अनेक श्रद्धालु उपस्थित रहे।

पंचम् पुण्यतिथि

स्व. श्री राजेन्द्र के. गोधा

संस्थापक, समाचार जगत

आपके जाने का दुःख समय के साथ कम नहीं हुआ,
बल्कि आपकी यादों का महत्व और बढ़ गया है।
हर पल आपकी छवि हमारे हृदय में बसती है।
5वीं पुण्यतिथि पर शत्-शत् नमन।

: श्रद्धावनत :

श्रीमती त्रिशला गोधा (धर्मपत्नी) शैलेन्द्र - प्रियंका (पुत्र-पुत्रवधु),
डोली (पुत्री), निशांत (पुत्र),
दिविक (पौत्र), विया (पौत्री),
श्रीमती शान्ती देवी गोधा (भाभी), सतीशचन्द्र नीलिमा,
तेज प्रकाश-सुरेखा (भाई-भाभी),
भागचंद जी जैन अत्तार, दीनदयाल जी पाटनी (बहनोई),
चित्रा - जिनेन्द्र जी जैन (बहन-बहनोई),
धीरेन्द्र - विनी, नमन - लवी (भतीजा- भतीजा बहु),
निकिता (भतीजी), देवांश (पौत्र)
एवं समस्त गोधा परिवार, लदाना वाले

दैनिक समाचार जगत परिवार
(प्रातः कालीन - सायंकालीन)

।। श्री 1008 पार्श्वनाथाय नमः।। ॐ ह्रूं विमल-विराग-विशुद्ध-विभव गुरुभ्यो नमः

श्री 1008 पार्श्वनाथ भगवान

श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर

त्रिवेणी नगर, जयपुर

आचार्य श्री 108 विभवसागर जी मुनिराज की परम प्रभावक शिष्या
सम्यक्त्व-वर्धिनी, भक्तामर साधिका एवं जिनधर्म प्रभाविका

आर्यिकारत्न श्री 105 अर्हंश्री माताजी ससंघ

का

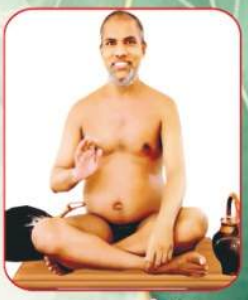

प.पू. आचार्य 108
श्री विभवसागर जी महाराज

भव्य मंगल प्रवेश

सम्यक्त्व-वर्धिनी, भक्तामर साधिका
आर्यिकारत्न 105 अर्हंश्री माताजी

सोमवार, 22 जून 2026
प्रातः 8.00 बजे
यूनियन बैंक के सामने, विश्वेरया नगर
त्रिवेणी नगर

वात्सल्य आमंत्रण

श्रमणी संस्कृतश्री माताजी

श्रमणी अर्हन्श्री माताजी

ब्र. राखी दीदी

ब्र. सुरभि दीदी

आत्मीय बन्धुवर,

सादर जय जिनेन्द्र।

अत्यंत हर्ष एवं गौरव का विषय है कि आचार्य श्री 108 विभवसागर जी मुनिराज की परम प्रभावक शिष्या, सम्यक्त्व-वर्धिनी, भक्तामर साधिका एवं जिनधर्म प्रभाविका आर्यिका श्री 105 अर्हंश्री माताजी ससंघ का भव्य मंगल प्रवेश दिनांक 22 जून 2026 को श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, त्रिवेणी नगर, जयपुर में होने जा रहा है। कृपया कार्यक्रम में उपस्थित हो धर्मलाभ प्राप्त करें।

-: निवेदक :-

त्रिवेणी नगर दिगम्बर जैन समिति

त्रिवेणी नगर, जयपुर (रजि.)

महेन्द्र काला
अध्यक्ष

शैलेन्द्र जैन
मंत्री

साधु सेवा समिति
महावीर कासलीवाल, कैलाश सौगाणी
हीरा, नितिन, अंकुर, साधना जी, रेणू जी

समस्त कार्यकारिणी सदस्यगण एवं महिला मण्डल

विनीत-सकल दिगम्बर जैन समाज, त्रिवेणी नगर, जयपुर

राजनीति

विश्व शांति एवं संतुलन के लिए आत्ममंथन हो जी-7 बैठक में

ललित गर्ग

फ्रांस में आयोजित जी-7 शिखर सम्मेलन पर पूरी दुनिया की निगाहें टिकी हैं। वैश्विक अर्थव्यवस्था, अंतर्राष्ट्रीय राजनीति, जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा सुरक्षा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और युद्ध जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा के लिए सात प्रमुख विकसित देशों का यह मंच एकत्रित हुआ है। ऐसे में यह प्रश्न स्वाभाविक है कि क्या जी-7 आज भी उतना ही प्रभावी और प्रासंगिक है जितना अपनी स्थापना के समय था, या फिर यह केवल कुछ शक्तिशाली देशों के हितों का प्रतिनिधि बनकर रह गया है। जी-7 में अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, इटली, कनाडा और जापान शामिल हैं, किंतु इसकी नीतियों पर अमेरिका का प्रभाव सबसे अधिक दिखाई देता है। विशेषकर राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की नीतियों ने कई अवसरों पर सहयोग के बजाय दबाव और वर्चस्व की राजनीति को बढ़ावा दिया है। व्यापारिक शुल्क, रक्षा व्यय और एकतरफा फैसलों को लेकर सहयोगी देशों के साथ मतभेद बढ़े हैं, जिससे संगठन की सामूहिकता कमजोर हुई है। रूस-यूक्रेन संघर्ष, पश्चिम एशिया की अस्थिरता, जलवायु संकट और वैश्विक आर्थिक चुनौतियों जैसे मुद्दों पर जी-7 अब तक कोई निर्णायक समाधान प्रस्तुत नहीं कर पाया है। ईरान-इजरायल तनाव ने भी ऊर्जा सुरक्षा और विश्व अर्थव्यवस्था पर गहरा प्रभाव डाला। होर्मुज जलडमरूमध्य से गुजरने वाली वैश्विक तेल आपूर्ति को लेकर पैदा हुई आशंकाओं ने अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में अस्थिरता बढ़ाई और सदस्य देशों के बीच मतभेद भी उजागर किए। ऐसे समय में भारत की उपस्थिति विशेष महत्व रखती है। भले ही भारत जी-7 का स्थायी सदस्य नहीं है, लेकिन उसकी बढ़ती आर्थिक शक्ति और वैश्विक दक्षिण के प्रतिनिधि स्वरूप ने उसे महत्वपूर्ण साझेदार बना दिया है। भारत को इस मंच पर विकासशील देशों की चिंताओं आर्थिक असमानता, खाद्य सुरक्षा, जलवायु न्याय और ऋण संकट को मजबूती से उठाना चाहिए तथा वैश्विक शासन व्यवस्था को अधिक लोकतांत्रिक और समावेशी बनाने की वकालत करनी चाहिए।

संपादकीय

पुस्तकें फिर से समाज की आत्मा बनें

देश 19 जून को राष्ट्रीय वाचन दिवस मना रहा है। यह दिन केरल के पुस्तकालय आंदोलन के जनक पी. एन. पणिक्कर की जयंती को समर्पित है, जिन्होंने साक्षरता और ज्ञान के प्रसार के लिए अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। आज, जब डिजिटल स्क्रीन हमारे दैनिक जीवन पर हावी होती जा रही हैं, तब यह दिवस केवल स्मरण का अवसर नहीं, बल्कि आत्ममंथन और ठोस संकल्प लेने का समय भी है। वर्तमान समय में भारत में पढ़ने की संस्कृति गंभीर चुनौती का सामना कर रही है। सोशल मीडिया, शॉर्ट वीडियो और त्वरित मनोरंजन के कारण युवाओं का ध्यान पुस्तकों से लगातार दूर होता जा रहा है। शिक्षा व्यवस्था में परीक्षा-केंद्रित सोच और रटने की प्रवृत्ति ने गहन अध्ययन की आदत को कमजोर कर दिया है। परिणामस्वरूप कल्पनाशक्ति, शब्द-संपदा, विश्लेषणात्मक क्षमता और धैर्य जैसे महत्वपूर्ण गुण प्रभावित हो रहे हैं। पुस्तकें केवल ज्ञान का स्रोत नहीं, बल्कि व्यक्तित्व और चरित्र निर्माण की आधारशिला हैं। महात्मा गांधी ने कहा था कि अच्छी पुस्तक पढ़ना एक अच्छे मित्र से संवाद करने जैसा है। यही कारण था कि पणिक्कर ने केरल में गांव-गांव पुस्तकालय स्थापित कर एक जनांदोलन खड़ा किया। आज उसी सोच को राष्ट्रीय स्तर पर पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है। देश में पुस्तकालयों की संख्या पर्याप्त दिखाई देती है, लेकिन अनेक पुस्तकालय संसाधनों के अभाव, आधुनिक सुविधाओं की कमी और उपेक्षा के कारण अपनी भूमिका प्रभावी ढंग से नहीं निभा पा रहे हैं। कई विद्यालयों और महाविद्यालयों में पुस्तकालय केवल औपचारिकता बनकर रह गए हैं, जबकि डिजिटल लाइब्रेरी और गुणवत्तापूर्ण स्थानीय भाषा साहित्य तक पहुंच भी अभी सीमित है। राष्ट्रीय वाचन दिवस का वास्तविक उद्देश्य पुस्तकों को पुनः जनजीवन का अभिन्न हिस्सा बनाना है। इसके लिए विद्यालयों में रीडिंग क्लब स्थापित किए जाएं, प्रत्येक सप्ताह नियमित लाइब्रेरी पीरियड सुनिश्चित किया जाए और जिलों में मोबाइल लाइब्रेरी वैन संचालित की जाएं। सार्वजनिक पुस्तकालयों का डिजिटलीकरण कर ई-बुक्स और ऑनलाइन संसाधनों की मुफ्त उपलब्धता बढ़ाई जाए। साथ ही प्रसिद्ध लेखक, खिलाड़ी और कलाकार ''रीडिंग एंबेसडर'' बनकर युवाओं को पढ़ने के लिए प्रेरित करें तथा गांवों में वाचन मेले और सस्ती पुस्तक प्रदर्शनियों का आयोजन किया जाए। वैज्ञानिक शोध भी बताते हैं कि नियमित वाचन मस्तिष्क के न्यूरल कनेक्शनों को मजबूत करता है, एकाग्रता बढ़ाता है, कल्पनाशक्ति का विस्तार करता है और बेहतर निर्णय लेने की क्षमता विकसित करता है। इसके विपरीत, लगातार छोटे-छोटे डिजिटल कंटेंट पर निर्भरता हमारी गहन सोचने की क्षमता को सीमित कर सकती है। साहित्य किसी भी समाज की सांस्कृतिक चेतना का संरक्षक होता है। प्रेमचंद, रवींद्रनाथ ठाकुर, ए. पी. जे. अब्दुल कलाम, अंतोन चेखव और जेन ऑस्टेन जैसे रचनाकारों ने अपने विचारों से पीढ़ियों को प्रभावित किया है।

-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

क्या राहुल गांधी राजनीति का फलसफा समझ चुके हैं?

सौरभ वार्ष्णेय

इंडिया गठबंधन की बैठकों का उद्देश्य केवल चुनावी तालमेल तक सीमित नहीं है, बल्कि विपक्षी दलों के बीच साझा राजनीतिक दृष्टि विकसित करना भी है। हाल के वर्षों में राहुल गांधी के राजनीतिक व्यवहार और सार्वजनिक हस्तक्षेपों को देखें तो ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने अपनी शैली में उल्लेखनीय बदलाव किया है। यही कारण है कि अब यह प्रश्न उठने लगा है कि क्या वे राजनीति का नया फलसफा समझ चुके हैं। गठबंधन की बैठकों में राहुल गांधी लगातार तीन प्रमुख बातों पर जोर देते दिखाई देते हैं विपक्षी एकता बनाए रखना, संविधान और सामाजिक न्याय को साझा एजेंडा बनाना तथा महंगाई, बेरोजगारी और किसानों के मुद्दों पर संयुक्त संघर्ष करना। उनका मानना है कि केवल चुनावी गणित नहीं, बल्कि जनता के बीच निरंतर संवाद और जनआंदोलन ही सशक्त विपक्ष की पहचान हो सकते हैं। राहुल गांधी बार-बार इस बात पर बल देते हैं कि लोकतांत्रिक संस्थाओं, संघीय ढांचे और संवैधानिक मूल्यों की रक्षा के लिए विपक्षी दलों को व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं से ऊपर उठकर काम करना होगा। उनका संदेश यह भी है कि गठबंधन किसी एक दल का मंच नहीं, बल्कि साझा राजनीतिक उद्देश्य का माध्यम है। यही विश्वास विभिन्न क्षेत्रीय दलों के बीच संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। पिछले कुछ वर्षों में उनकी राजनीति केवल चुनावी भाषणों तक सीमित नहीं रही। देशव्यापी यात्राओं, सामाजिक संवाद और विभिन्न वर्गों के बीच सक्रिय उपस्थिति ने उनकी सार्वजनिक छवि को नया आयाम दिया है। पहले जहां उन्हें अनुभवहीन नेता के रूप में देखा जाता था, वहीं अब वे कई राष्ट्रीय मुद्दों पर अधिक स्पष्ट और आत्मविश्वास के साथ अपनी बात रखते नजर आते हैं। उनके समर्थकों का मानना है कि वे केंद्र सरकार की रणनीतियों को समझते हुए पहले से अधिक संगठित ढंग से विपक्ष की भूमिका निभा रहे हैं। हालांकि किसी भी राजनीतिक नेता की परिपक्वता का अंतिम आकलन केवल भाषणों या जनसंपर्क अभियानों से नहीं होता। चुनावी सफलता, संगठन को मजबूत करने की क्षमता और वैकल्पिक नीतिगत दृष्टि प्रस्तुत करना भी उतना ही आवश्यक है। इस मोर्चे पर राहुल गांधी के सामने अभी कई चुनौतियां मौजूद हैं। इंडिया गठबंधन को भी सीट बंटवारे, क्षेत्रीय प्राथमिकताओं और नेतृत्व संबंधी मतभेदों जैसी व्यावहारिक समस्याओं से जूझना पड़ रहा है। इसी बीच तृणमूल कांग्रेस और कांग्रेस के संभावित विलय को लेकर समय-समय पर चर्चाएं सामने आती रही हैं। हालांकि अब तक दोनों दलों के नेताओं ने ऐसी अटकलों को खारिज किया है और किसी औपचारिक विलय के संकेत नहीं दिए हैं। राजनीतिक दृष्टि से भी टीएमसी की क्षेत्रीय पहचान और संगठनात्मक स्वतंत्रता को देखते हुए पूर्ण विलय की संभावना फिलहाल कम दिखाई देती है। इसके बजाय चुनावी सहयोग और व्यापक विपक्षी समन्वय अधिक व्यावहारिक विकल्प माना जा सकता है। कुल मिलाकर राहुल गांधी की राजनीति में पहले की तुलना में अधिक धैर्य, निरंतरता और रणनीतिक सोच दिखाई देती है। वे लगातार जनता के बीच जाकर अपनी बात रख रहे हैं और विपक्षी एकता पर जोर दे रहे हैं। यह बदलाव भारतीय राजनीति में उनकी भूमिका को अधिक गंभीर और परिपक्व नेता के रूप में स्थापित करने की दिशा में महत्वपूर्ण संकेत माना जा सकता है। आने वाले समय में यह देखना दिलचस्प होगा कि क्या यह राजनीतिक परिपक्वता व्यापक जनसमर्थन और चुनावी सफलता में भी परिवर्तित हो पाती है।

दुनिया में देव अनेकों हैं, तीर्थंकर प्रभु का क्या कहना...

श्री संभवनाथ जैन श्वेताम्बर मंदिर में 16वां वार्षिक ध्वजा एवं मंदिर वर्षगांठ महोत्सव आज

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया

शहर के बापूनगर स्थित श्री संभवनाथ जैन श्वेताम्बर मंदिर का 16वां वार्षिक ध्वजा एवं मंदिर वर्षगांठ महोत्सव दो दिवसीय कार्यक्रमों के साथ गुरुवार रात भक्ति संध्या से प्रारंभ हुआ। मेवाड़ देशोद्धारक आचार्य श्री जितेन्द्र सूरिश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न आचार्य श्री निपुणरत्न विजय सूरिश्वरजी म.सा. एवं पूज्य राजरत्न विजयजी म.सा. की प्रेरणा एवं पावन आशीर्वाद से आयोजित इस कार्यक्रम में श्रद्धा और भक्ति का अद्भुत वातावरण देखने को मिला। सायंकालीन आरती के पश्चात तीर्थंकर विमलनाथ भगवान, तीर्थंकर संभवनाथ भगवान एवं नाकोड़ा भैरव देव की भव्य अंगरचना के दर्शन कर श्रद्धालु भावविभोर हो उठे। सर्व मंगलकारी नवकार महामंत्र की आराधना के साथ प्रारंभ हुई भक्ति संध्या में नीमच के प्रसिद्ध जैन संगीतकार महावीर जैन एंड ग्रुप तथा भीलवाड़ा के गोविन्द गुरावा ने प्रभु भक्ति एवं आध्यात्मिक भावना से ओतप्रोत भजनों की मनमोहक

प्रस्तुतियां दीं, जिससे देर रात तक श्रद्धालु भक्तिरस में सराबोर होकर झूमते रहे। कार्यक्रम का भावपूर्ण संचालन कुलदीप गुगलिया ने किया। गोविन्द गुरावा ने नवकार मंत्र से शुरूआत करते हुए ''जहां नेमि के चरण पड़े'' और ''पारस प्यारो लागे'' जैसे भजनों की प्रस्तुति देकर वातावरण को भक्तिमय बना दिया। इसके बाद मंच पर पहुंचे महावीर जैन का श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक स्वागत किया। उन्होंने ''दुनिया में देव अनेकों हैं, तीर्थंकर प्रभु का क्या कहना'', ''चिंतामणि म्हारी चिंता चूर'', ''विश्वास कर दादा पे'' तथा ''मेरी झोपड़ी के भाग आज खुल जाएंगे'' सहित अनेक भजनों की प्रस्तुति देकर श्रद्धालुओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। श्रोताओं के विशेष आग्रह पर उन्होंने ''बोल-बोल आदिश्वर वाला'' एवं ''भक्ति की है रात'' जैसे लोकप्रिय भजनों का भी गायन किया, जिस पर पूरा पंडाल भक्तिमय उल्लास से झूम उठा। सहगायक विष्णु वैष्णव एवं कुलदीप गुगलिया ने भी अपनी प्रस्तुतियों से समां बांध दिया। मंदिर समिति के अध्यक्ष मनीष बापना एवं अन्य पदाधिकारियों ने अतिथियों और श्रद्धालुओं का स्वागत किया। तीर्थंकर विमलनाथ भगवान, तीर्थंकर संभवनाथ भगवान एवं नाकोड़ा भैरव देव की आकर्षक अंगरचना तैयार करने में दिनेश गोलेछा, संजय लोढ़ा, श्रेयांश गुगलिया, गार्गी खाब्या, लक्की खाब्या, सिदिक्षा खाब्या एवं यशस्वी खाब्या का विशेष सहयोग रहा। पूरे मंदिर परिसर को घी के दीपकों से भव्य रूप से सजाया गया। मंदिर समिति के मंत्री दिनेश गोलेछा ने बताया कि परमात्मा की भव्य अंगरचना एवं आरती के चढ़ावे भी श्रद्धालुओं द्वारा लिए गए। भक्ति संध्या को सफल बनाने में मंदिर समिति के पदाधिकारी बलवंत मेहता, गुणवंत जैन, राजमल सिंदुरिया, संदीप खमेसरा, लविश करणपुरिया, अनिल विश्नोत, मनोज महात्मा, मनोज डोशी, संजय सिंघवी, संजय लोढ़ा, पंकज लोढ़ा, दिलीप जैन, नीलेश भंडारी, विवेक खाब्या, सुनील कर्णावत सहित अनेक कार्यकर्ताओं का उल्लेखनीय सहयोग रहा।

"मैं और मेरा इंटरव्यू"

आजकल इस देश में दो चीजें बहुत तेजी से बढ़ रही हैं—एक महंगाई और दूसरी इंटरव्यू देने वालों की संख्या। फर्क सिर्फ इतना है कि महंगाई बढ़कर जेब खाली करती है और इंटरव्यू बढ़कर आत्मविश्वास खाली कर देते हैं। मैं भी एक दिन उत्साह से भरकर इंटरव्यू देने निकल पड़ा। घर वालों ने मुझे ऐसे विदा किया जैसे मैं कोई युद्ध जीतने जा रहा हूँ। माँ ने दही-चीनी खिलाई, पिता जी ने जीवन के अनमोल उपदेश दिए और पड़ोसी ने कहा, भाई, नौकरी लग जाए तो हमें भूल मत जाना। मैंने मन ही मन सोचा, नौकरी तो लगने दो, अभी तो इंटरव्यू बोर्ड ही मुझे नहीं भूल पाएगा। इंटरव्यू स्थल पर पहुँचते ही लगा कि पूरा देश बेरोजगारी के खिलाफ एक विशाल सम्मेलन करने आया है। बाहर उम्मीदवारों की ऐसी भीड़ थी कि यदि उनमें से आधे को भी नौकरी मिल जाती, तो देश की अर्थव्यवस्था संभल जाती। सबके हाथ में फाइलें थीं। कुछ लोग फाइल ऐसे पकड़े हुए थे जैसे उसमें उनके पूर्वजों की संपत्तियाँ हों। कुछ उम्मीदवार अंतिम समय में किताबें पलट रहे थे। उन्हें देखकर लगता था कि अगर इंटरव्यू एक घंटा और लेट हो जाए, तो वे परमाणु विज्ञान में भी पीएचडी कर लेंगे। एक सज्जन बार-बार कह रहे थे, भाई साहब, इंटरव्यू में कॉन्फिडेंस होना चाहिए। उनका आत्मविश्वास देखकर लग रहा था कि वे इंटरव्यू लेने आए हैं, देने नहीं। इसी बीच एक उम्मीदवार बाहर निकला। उसका चेहरा ऐसा था जैसे अभी-अभी उसने अपनी सारी उम्मीदों का अंतिम संस्कार किया हो। सब लोग उसके चारों ओर ऐसे जमा हो गए जैसे युद्धभूमि से लौटे सैनिक से हाल पूछा जाता है।

क्या पूछा अंदर?

उसने गहरी साँस लेकर कहा, कुछ समझ नहीं आया। उन्होंने पूछा मैं कौन हूँ, और मैं यही सोचता रह गया कि सच में मैं कौन हूँ। इतना कहकर वह दार्शनिक बन चुका था। आखिर मेरा नंबर भी आ गया। कमरे में प्रवेश करते ही मैंने देखा कि सामने पाँच लोग बैठे थे। उनके चेहरे पर वही रहस्यमयी मुस्कान थी, जो गणित के शिक्षक परीक्षा के दिन रखते हैं। उन्होंने कहा, बैठिए। मैं बैठ गया। फिर उन्होंने पूछा, अपने बारे में बताइए। यह प्रश्न सुनते ही मैं सोच में पड़ गया। पूरी जिंदगी खुद को समझने में निकल गई और अब पाँच मिनट में उसका सार बताना था! मैंने नाम बताया, शिक्षा बताई, शौक बताए। उन्होंने पूछा, आपकी सबसे बड़ी कमजोरी क्या है? मैं सच बोलना चाहता था कि सर, मेरी सबसे बड़ी कमजोरी नौकरी की सख्त जरूरत है। लेकिन मैंने कहा, मैं एक परफेक्शनिस्ट हूँ। वे मुस्कुराए। मैं समझ गया कि यह उत्तर वे पिछले सौ उम्मीदवारों से भी सुन चुके थे। फिर एक सदस्य ने पूछा, पाँच साल बाद आप खुद को कहाँ देखते हैं? मैं कहना चाहता था, सर, फिलहाल तो अगले पाँच मिनट में खुद को यहीं देख पाने की कोशिश कर रहा हूँ। लेकिन मैंने जवाब दिया, मैं संगठन की प्रगति में योगदान देते हुए स्वयं को एक जिम्मेदार पद पर देखता हूँ। यह सुनकर मुझे खुद पर गर्व हुआ। इतनी बड़ी बात मैंने जीवन में पहली बार कही थी। फिर सामान्य ज्ञान का दौर शुरू हुआ। उन्होंने पूछा, भारत की सबसे बड़ी समस्या क्या है? मैंने सोचा कि अगर ईमानदारी से जवाब दिया, तो इंटरव्यू यहीं समाप्त हो जाएगा। इसलिए मैंने एक सुरक्षित उत्तर दिया। उन्होंने पूछा, यदि आपको यह नौकरी नहीं मिली, तो आप क्या करेंगे? मैं कहना चाहता था, सर, अगला इंटरव्यू दूँगा और यही जवाब फिर से दोहराऊँगा। लेकिन मैंने कहा, मैं और मेहनत करूँगा। यह उत्तर सुनकर वे ऐसे खुश हुए जैसे मेहनत करने का पेटेंट उन्हीं के पास हो। इंटरव्यू के दौरान मुझे एक और महान सत्य का ज्ञान हुआ—इंटरव्यू में प्रश्नों से ज्यादा महत्वपूर्ण चेहरे के भाव होते हैं। अगर आप सही उत्तर देकर घबरा जाएँ, तो उत्तर गलत माना जा सकता है। और यदि गलत उत्तर देकर मुस्कुरा दें, तो लगता है जैसे आपने कोई नई खोज कर ली हो। सबसे कठिन क्षण तब आया जब उन्होंने पूछा, क्या आपके पास हमसे कोई प्रश्न है? मैंने सोचा कि पूछूँ, सर, चयन की संभावना कितनी है? लेकिन अनुभव कहता है कि ऐसे प्रश्न पूछने वालों को संभावना समझाने की आवश्यकता नहीं पड़ती। इसलिए मैंने पूछा, संस्था के विकास की भविष्य की योजनाएँ क्या हैं? यह प्रश्न पूछते समय मैं स्वयं अपने ज्ञान से प्रभावित था। इंटरव्यू समाप्त हुआ। उन्होंने कहा, ठीक है, हम आपको सूचित करेंगे। यह वाक्य भारतीय इंटरव्यू इतिहास का सबसे रहस्यमय वाक्य है। इसका अर्थ कुछ भी हो सकता है:

आपको नौकरी मिल गई है।
आपको नौकरी नहीं मिली है।
हमें खुद नहीं पता।
हमें याद भी नहीं रहेगा कि आप कौन थे।

मैं बाहर निकला और घर पहुँचा। सबकी आँखों में उत्सुकता थी— कैसा रहा इंटरव्यू? मैंने कहा, बहुत अच्छा। यह वह उत्तर है जो लगभग हर उम्मीदवार देता है, चाहे अंदर उसकी कैसी भी परीक्षा हुई हो।

कुछ दिन बीते। हर बार मोबाइल बजता तो दिल की धड़कन बढ़ जाती। अगर बैंक का लोन ऑफर आता तो भी लगता शायद नियुक्ति पत्र हो। लेकिन इंटरव्यू का परिणाम नहीं आया।

तब समझ में आया कि इंटरव्यू सिर्फ नौकरी पाने की प्रक्रिया नहीं है, यह धैर्य, आशा, निराशा, अभिनय, सामान्य ज्ञान, असामान्य प्रश्न और कृत्रिम मुस्कान का संयुक्त राष्ट्रीय उत्सव है। आज वर्षों बाद जब मैं किसी इंटरव्यू का नाम सुनता हूँ, तो सम्मान से सिर झुक जाता है।

क्योंकि इंटरव्यू वह जगह है जहाँ एक साधारण इंसान कुछ मिनटों के लिए दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री, प्रेरक वक्ता और भविष्यवक्ता—सब कुछ बन जाता है। और अंत में उसे सिर्फ एक ही उत्तर मिलता है—

धन्यवाद, हम आपको सूचित करेंगे।

यही वाक्य भारतीय युवाओं के सपनों का सबसे बड़ा सस्पेंस है, और शायद दुनिया का सबसे लंबा चलने वाला व्यंग्य भी।

मुकेश कुमार बिस्साः जैसलमेर

पुस्तक समीक्षाः पंथों से परे केवल भक्ति की भावनाओं का संकलन-'अभिनव जिनपूजन सन्दोह'

जैन भक्ति-साहित्य में अभिनव जिनपूजन सन्दोह एक ऐसी विशिष्ट कृति है, जो अपने नाम को पूर्णतः सार्थक करती है। एक ही ग्रन्थ में 96 पूजाओं का इतना व्यापक, सुव्यवस्थित और प्रामाणिक संकलन अत्यंत दुर्लभ है। इसमें देव-शास्त्र-गुरु की 34, विद्यमान बीस तीर्थंकरों की 13, सिद्ध भगवन्तों की 18, वर्तमान चतुर्विंशति तीर्थंकरों की 14, पंच परमेष्ठी की 4, नवदेवताओं की 11 तथा सिद्धक्षेत्रों की 2 पूजाएँ संग्रहीत हैं। यह संकलन मात्र संख्यात्मक विस्तार नहीं, बल्कि जैन भक्ति-परम्परा की विशालता, विविधता और आध्यात्मिक समृद्धि का सजीव परिचायक है। इस पूजन पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि विभिन्न आचार्यों, मुनिराजों, कवियों और विद्वानों द्वारा रचित पूजाओं को एक ही स्थान पर क्रमबद्ध रूप से संकलित करने का सफल प्रयास किया गया है। अनेक पूजाएँ जो विभिन्न पुस्तकों और सीमित प्रकाशनों में बिखरी हुई थीं, वे इस कृति के माध्यम से अब सहज रूप में उपलब्ध हैं। विशेष रूप से पूजाओं में प्रयुक्त कठिन, प्राचीन एवं संस्कृतनिष्ठ शब्दों के सरल शब्दार्थ भी दिए गए हैं, जिससे सामान्य पाठक, स्वाध्यायी और पूजनकर्ता भावों को सहजता से समझ सकें। यह व्यवस्था पुस्तक की उपयोगिता को कई गुना बढ़ा देती है। इस दृष्टि से यह पुस्तक केवल पूजाओं का संग्रह नहीं, बल्कि

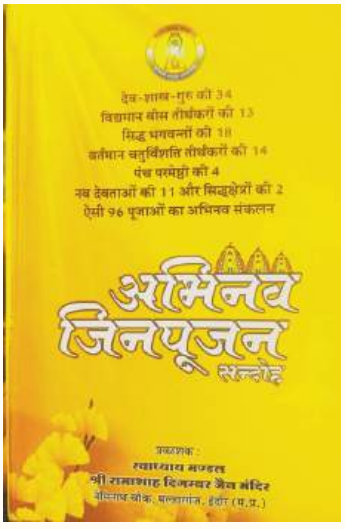

जैन भक्ति-साहित्य की एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक धरोहर है। इस महत्वपूर्ण कृति का संकलन सेवानिवृत्त प्राध्यापक श्री शान्तिलाल बड़जात्या (इन्दौर) ने इन्दौर के सुप्रसिद्ध विद्वान स्वर्गीय पंडित श्री रतनलाल जी शास्त्री एवं पंडित श्री रमेशचन्द्र बाँझल के मार्गदर्शन में किया है। इसके लिए वे साधुवाद के पात्र हैं। उनकी अध्ययनशील दृष्टि, शोधपरक प्रवृत्ति और भक्ति-संवेदना ने इस ग्रन्थ को विशिष्ट गरिमा प्रदान की है। पूजन-प्रिय समाज के लिए किया गया उनका यह श्रम एक स्थायी साहित्यिक एवं धार्मिक सेवा के रूप में सदैव स्मरणीय रहेगा। वर्ष 2013 में प्रथम संस्करण के प्रकाशन से लेकर आज तक हजारों श्रद्धालु, स्वाध्यायी और आराधक इस कृति का लाभ प्राप्त कर चुके हैं। इसकी निरंतर बढ़ती लोकप्रियता तथा बार-बार के प्रकाशन इसकी उपयोगिता और व्यापक स्वीकार्यता के सशक्त प्रमाण हैं। वर्ष 2026 में प्रकाशित संशोधित एवं संवर्धित संस्करण और भी अधिक परिमार्जित, आकर्षक तथा संग्रहणीय स्वरूप में पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है। भाषा, सम्पादन और प्रस्तुति की दृष्टि से भी यह कृति विशेष उल्लेखनीय है। सम्पूर्ण ग्रन्थ में हिन्दी एवं संस्कृत की शुद्धता, वर्तनी की सजगता तथा भावाभिव्यक्ति की स्पष्टता एक विद्वान प्राध्यापक की सूक्ष्म दृष्टि का परिचय देती है। सम्पादन में अनुशासन और प्रस्तुति में संतुलन दिखाई देता है, जिससे पाठक का ध्यान विषयवस्तु पर केन्द्रित बना रहता है। निस्संदेह, अभिनव जिनपूजन सन्दोह केवल पूजाओं का संकलन नहीं, बल्कि भक्ति, श्रद्धा और आराधना की निर्मल भावधारा का संगम है। जैन समाज की पूजन-परम्परा को समृद्ध करने वाली यह कृति आने वाले समय में भी साधकों, स्वाध्याय-प्रेमियों और भक्ति-पथ के अनुगामियों के लिए समान रूप से प्रेरणादायी एवं उपयोगी बनी रहेगी। यह पुस्तक भक्ति के माध्यम से आत्मोन्नति की दिशा में एक सशक्त सेतु का कार्य करती है।

पुस्तक प्राप्ति हेतु संपर्कः
श्री शान्तिलाल बड़जात्या
23, रामचंद्र नगर, इन्दौर - 452005
मो.: 9407006616

राजेन्द्र जैन 'महावीर', सनावद
मो.: 9407492577

जनता कॉलोनी में श्री 1008 महावीर स्वामी दिगंबर जैन मंदिर का मंत्रोच्चार के साथ शिलान्यास संपन्न

आचार्य श्री सुन्दरसागर जी व आचार्य श्री शशांकसागर जी महाराज के सानिध्य में हुआ जिनालय नवनिर्माण का शुभारंभ

जयपुर. शाबाश इंडिया

गुलाबी नगरी जयपुर की जनता कॉलोनी में देवाधिदेव श्री 1008 महावीर स्वामी दिगंबर जैन मंदिर के जिनालय नवनिर्माण का भव्य शिलान्यास समारोह गुरुवार, 18 जून को मंत्रोच्चार, मंगल ध्वनियों और जयकारों के बीच संपन्न हुआ। राष्ट्रीय संत, परम पूज्य तपस्वी रत्न, आचार्य 108 सुन्दरसागर महाराज ससंघ एवं आचार्य 108 शशांकसागर महाराज ससंघ के पावन सानिध्य में यह ऐतिहासिक कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस मौके पर बडी संख्या में श्रद्धालु शामिल हुए। जनता कालोनी जैन सभा के अध्यक्ष प्रकाश पापडीवाल एवं सचिव उजास जैन ने बताया कि इस जिनालय का शिलान्यास करते हुए शिलान्यासकर्ता अनिल , सुनील, राकेश गंगवाल परिवार ने मंत्रोच्चार के मध्य आधारशिला रखी। आचार्य श्री के सानिध्य में प्रतिष्ठाचार्य दीदी ने पंचपरमेष्ठी मंत्रों से भूमि पूजन कराया। इससे पूर्व ध्वजारोहण के बाद दीप प्रज्जवलन व आचार्य श्री के पाद-प्रक्षालन श्रावक श्रेष्ठी नंद किशोर , प्रमोद , सुनील पहाड़िया द्वारा किया गया। आचार्य भगवंतों का पाद-प्रक्षालन कर पहाडियाँ परिवार ने आशीर्वाद प्राप्त किया। इस मौके पर आयोजित धर्म सभा में आचार्य सुन्दरसागर महाराज ने कहा कि जिनालय निर्माण केवल ईंट-पत्थर का कार्य नहीं, यह कोटि-कोटि जीवों के भव सुधारने का पुण्य कार्य है। आचार्य शशांकसागर ने श्रावकों को धर्म प्रभावना बढ़ाने और अहिंसा के मार्ग पर चलने का संदेश दिया। मुख्य समन्वयक सुधीर गंगवाल ने बताया कि शिलान्यास समारोह के पुण्यार्जक परिवारों में शांता देवी-सुरेश-सिद्धार्थ गंगवाल, सुभाष-सौरभ-साकेत अजमेरा, संजय-सत्यम गंगवाल, नरेश-पंकज-राहुल रावका, सुधीर, राजेश, मुकेश गंगवाल आसलपुर वाला परिवार सहित जनता कॉलोनी व आसपास के सैकड़ों पुण्यार्जक परिवार उपस्थित रहे। कार्यक्रम्वप्रबन्ध कार्यकारिणी जनता कॉलोनी जैन सभा व सकल दिगंबर जैन समाज, जनता कॉलोनी के तत्वावधान में हुआ। अध्यक्ष प्रकाश पापड़ीवाल, मुख्य समन्वयक सुधीर गंगवाल, समन्वयक विनोद मोनू छाबड़ा एवं सचिव उजास जैन ने व्यवस्थाएं संभाली। कार्यक्रम में श्री महावीर दिगम्बर जैन शिक्षा परिषद जयपुर के अध्यक्ष उमराव मल संघी, वरिष्ठ उपाध्यक्ष मुकुल कटारिया, श्री वीर सेवक मण्डल जयपुर के अध्यक्ष महेश काला, राजस्थान जैन युवा महासभा जयपुर के प्रदेश अध्यक्ष प्रदीप जैन, राजस्थान जैन सभा जयपुर के उपाध्यक्ष विनोद जैन कोटखावदा, महामंत्री मनीष बैद, श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के राजस्थान अंचल अध्यक्ष कमल बाबू जैन, दिगम्बर जैन महासमिति के राष्ट्रीय महामंत्री सुरेन्द्र पाण्डया, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी राजस्थान अंचल के अध्यक्ष राज कुमार कोठ्यारी, समाचार जगत के प्रधान सम्पादक शैलेन्द्र गोधा, मुकेश सोगानी, अजय कटारिया, सुमेर रावका, विनोद जैन सहित महिला फैडरेशन की अध्यक्ष मंजू गंगवाल, महामंत्री सुधा जैन सहित हजारों श्रद्धालु उपस्थित रहे। मंच संचालन मनीष बैद ने किया। @...पेज 8 पर

जयपुर की जनता कॉलोनी में गूंजे मंगल जयकारे

श्री 1008 महावीर स्वामी मंदिर का भव्य शिलान्यास संपन्न

गायत्री नगर में गणिनी आर्यिका विभाश्री माताजी ससंघ का भव्य मंगल प्रवेश

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्री दिगंबर जैन मंदिर, महारानी फार्म (गायत्री नगर), जयपुर में मंदिर प्रबंध समिति के तत्वावधान में बुधवार सायं परम पूज्य गणाचार्य श्री विराग सागर जी महामुनिराज एवं चर्या शिरोमणि आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज की आज्ञानुवर्ती विदुषी शिष्या परम पूज्य गणिनी आर्यिका श्री विभाश्री माताजी ससंघ का भव्य मंगल प्रवेश संपन्न हुआ। आर्यिका संघ ने सायं 6:30 बजे मीरा मार्ग स्थित मानसरोवर जैन मंदिर से विहार प्रारंभ किया और बैण्ड-बाजों के साथ सायं 7 बजे गायत्री नगर जैन मंदिर पहुंचा, जहां श्रद्धालुओं ने भव्य स्वागत किया। मंदिर प्रबंध समिति के अध्यक्ष अरुण शाह ने बताया कि विहार के दौरान मार्ग में अनेक श्रावकों के आवासों के सामने आरती एवं पाद-प्रक्षालन का आयोजन किया गया। मंदिर पहुंचने पर अध्यक्ष अरुण शाह के नेतृत्व में मंत्री राजेश वोहरा, संयुक्त मंत्री संजय ठोलिया, कोषाध्यक्ष राकेश छावड़ा, उपाध्यक्ष विजय सोगानी, संतोष गंगवाल, राकेश पाटोदी, पदम झांझरी, बसंत बाकलीवाल, संतोष रावका सहित अन्य पदाधिकारियों ने आरती उतारी। महिला मंडल एवं मुनि वैय्यावृति महिला समूह की पदाधिकारी एवं सदस्यों ने मंगल कलश के साथ भव्य अगवानी की, जिसके पश्चात श्रद्धालुओं ने पाद-प्रक्षालन का लाभ प्राप्त किया। अपने मंगल उद्बोधन में गणिनी आर्यिका श्री विभाश्री माताजी ने कहा कि जब-जब संतों का आगमन होता है, तब-तब समाज में जैन संस्कृति मुस्कराती रहती है। उन्होंने कहा कि संतों का सान्निध्य सातिशय पुण्य से प्राप्त होता है और उनका समागम भविष्य के लिए अनंत पुण्यों का संचय कर जाता है। इसलिए प्रत्येक भव्य आत्मा को इसे अपना सौभाग्य मानना चाहिए। उन्होंने प्रतिदिन आराधना कर अपने जीवन को मंगलमय बनाने का संदेश भी दिया। इस अवसर पर परम पूज्य श्रमणी आर्यिका विनयश्री माताजी ने श्रद्धालुओं के लिए प्रश्नोत्तरी का आयोजन भी कराया। युवा परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री उदयभान जैन ने बताया कि पूज्य आर्यिका संघ में 11 विदुषी आर्यिकाएं विराजमान हैं। उनके सान्निध्य में श्रुत पंचमी महोत्सव के अवसर पर 19 जून को प्रातः 8 बजे मंदिर के बेसमेंट में श्रुत स्कंध विधान आयोजित किया जाएगा। वहीं सायं 7:30 बजे आनंद यात्रा निकाली जाएगी, जिसके उपरांत बच्चों द्वारा संयोजिका संगीता छाबड़ा एवं मनीषा टोंग्या के निर्देशन में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाएंगे।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर गंगापुर सिटी में भावना योग शिविर आयोजित, भारत के पहले भावना योग केंद्र में जुटे दर्जनों श्रद्धालु

गंगापुर सिटी. शाबाश इंडिया

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के पावन अवसर पर गंगापुर सिटी स्थित वर्धमान हॉस्पिटल के भावना योग केंद्र में दिगंबर जैन सोशल ग्रुप के तत्वावधान में भव्य भावना योग शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में परम पूज्य दिगंबर जैन संत मुनिश्री 108 प्रमाण सागर जी महाराज की टेलीविजन के माध्यम से प्राप्त प्रेरणा के अनुरूप दर्जनों साधकों ने भावना योग का अभ्यास कर मानसिक शांति एवं सकारात्मक ऊर्जा का अनुभव किया।

मानसिक स्वास्थ्य पर दिया गया विशेष जोर

कार्यक्रम के संयोजक एवं वर्धमान हॉस्पिटल के निदेशक डॉ. मनोज जैन ने बताया कि जहां सामान्य योगासन मुख्य रूप से शारीरिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ बनाते हैं, वहीं भावना योग का सीधा प्रभाव मन, विचारों और भावनाओं पर पड़ता है। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में तनाव, चिंता और अवसाद जैसी मानसिक समस्याएं तेजी से बढ़ रही हैं तथा भावना योग इनसे मुक्ति दिलाकर मानसिक संतुलन और सकारात्मक सोच विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

भारत का पहला भावना योग केंद्र

दिगंबर जैन सोशल ग्रुप के अध्यक्ष नरेंद्र जैन नृपत्या ने बताया कि मुनिश्री 108 प्रमाण सागर जी महाराज की प्रेरणा से कुछ समय पूर्व वर्धमान हॉस्पिटल, गंगापुर सिटी में भारत का पहला भावना योग केंद्र स्थापित किया गया है। यह केंद्र अस्पताल में भर्ती मरीजों, उनके परिजनों एवं आम नागरिकों के लिए निःशुल्क संचालित किया जा रहा है। यहां प्रतिदिन प्रातः एवं सायंकाल भावना योग के नियमित सत्र आयोजित किए जाते हैं, जिनसे सैकड़ों लोग लाभान्वित हो रहे हैं।

बड़ी संख्या में रही सहभागिता

शिविर में डॉ. सुलेखा जैन, रीजन उपाध्यक्ष विमल जैन, संस्थापक अध्यक्ष सुमेर जैन सोनी, सचिव महेश जैन, उपाध्यक्ष रमेश जैन, संगठन सचिव ज्ञानेंद्र जैन, महिला प्रभारी मोनिका जैन, नीलेश जैन, दीप्ति जैन, दिगंबर जैन समाज के अध्यक्ष प्रवीण जैन गंगवाल, श्वेतांबर जैन समाज के अध्यक्ष रितेश पल्लीवाल, अनिल जैन, दीप शेखर जैन, अंजना जैन, अलका जैन, शशि सोनी, विद्या जैन, जिज्ञा जैन तथा मानव सेवा संस्थान के संरक्षक विजय गोयल सहित बड़ी संख्या में शहर के गणमान्य नागरिक एवं श्रद्धालु उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतिभागियों ने नियमित रूप से भावना योग करने का संकल्प लिया। आयोजकों ने बताया कि शीघ्र ही केंद्र में बच्चों एवं युवाओं के लिए विशेष भावना योग सत्र भी प्रारंभ किए जाएंगे, ताकि अधिक से अधिक लोग मानसिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य का लाभ प्राप्त कर सकें।

जिनवाणी के जयघोष से गूंजा जनकपुरी

श्रुत स्कन्ध पूजा विधान में श्रद्धालुओं ने अर्पित की ज्ञान-भक्ति

जयपुर. शाबाश इंडिया

राजस्थान जैन साहित्य परिषद के तत्वावधान में आयोजित तीन दिवसीय श्रुत पंचमी महोत्सव के अंतर्गत गुरुवार प्रातः श्री दिगंबर जैन मंदिर, जनकपुरी-ज्योतिनगर, में श्रुत स्कन्ध पूजा विधान अत्यंत श्रद्धा, भक्ति और उल्लास के साथ संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रातः षट्खण्डागम की भव्य पालकी यात्रा के साथ हुआ। इस दौरान महिलाओं ने सिर पर जिनवाणी धारण कर श्रद्धापूर्वक सहभागिता निभाई। जिनवाणी के जयघोष से पूरा वातावरण धर्ममय हो उठा। इसके पश्चात मंडल विधान में मूल नायक भगवान नेमिनाथ को पाण्डुशिला पर विराजमान कर सौधर्म इंद्र जे.के. जैन एवं लाड़ देवी परिवार द्वारा शांतिधारा की गई। वहीं राजेश गर्ग जैन ने भी शांतिधारा करने का सौभाग्य प्राप्त किया। श्रद्धालुओं ने जिनवाणी माँ की सामूहिक आराधना करते हुए अष्टद्रव्य से पूजन-अर्चन कर श्रुत ज्ञान के प्रति अपनी गहन आस्था व्यक्त की। पूरे वातावरण में भक्ति, आध्यात्मिकता और धर्ममय भावनाओं का अनुपम संगम देखने को मिला। विशेष रूप से भगवान धर्मनाथ के निर्वाण कल्याणक के उपलक्ष्य में निर्वाण लाडू राजस्थान जैन साहित्य परिषद के संरक्षक शांतिलाल गंगवाल एवं महेशचंद्र चांदवाड़ ने परिषद सदस्यों एवं समाजजनों के साथ श्रद्धापूर्वक अर्पित किया। इस आयोजन में राजस्थान जैन साहित्य परिषद के अध्यक्ष पदम जैन बिलाला एवं मंत्री महावीर चांदवाड़ के नेतृत्व में परिषद के पदाधिकारी एवं सदस्यों ने सक्रिय सहभागिता निभाई। विधानाचार्य प० रमेश जैन गंगवाल ने आयोजन की व्यवस्थाओं का संचालन किया। मंदिर समिति की ओर से मंदिर अध्यक्ष बुद्धि प्रकाश छाबड़ा, मंदिर मंत्री देवेन्द्र कासलीवाल तथा स्थानीय संयोजक प्रदीप जैन चांदवाड़ ने परिषद के अध्यक्ष, मंत्री, विधानाचार्य तथा सदस्यों का स्वागत किया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में धर्मप्रेमी श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित रहीं और जिनवाणी माँ की आराधना कर श्रुत पंचमी महोत्सव की गरिमा को बढ़ाया। परिषद का छ दशक से प्रतिष्ठा पूर्ण आयोजन जिनवाणी रथ यात्रा शुक्रवार को निकाली जाएगी।

समवशरण में दिन-रात का भेद नहीं होता, वहां भव्य जीव अपने सात भव देख सकते हैं : आचार्य श्री वर्धमान सागर जी

जोबनेर. शाबाश इंडिया। श्री पार्श्वनाथ बड़ा मंदिर सहित अनेक जिनालयों एवं चैत्यालयों से सुशोभित तथा अनेक साधुओं की जन्म एवं कर्मभूमि जोबनेर में वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज 36 साधुओं के संघ सहित अल्पकालीन प्रवास पर विराजमान हैं। उनके सान्निध्य में प्रतिदिन विविध धार्मिक अनुष्ठान संपन्न हो रहे हैं। प्रतिदिन प्रातः श्रीजी का भव्य पंचामृत अभिषेक, पूजन, स्वाध्याय एवं जप के कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं, जिनमें नियमपूर्वक दर्शन, अभिषेक और पूजा करने वाले श्रद्धालु बड़ी संख्या में भाग ले रहे हैं। 'जहां चाह, वहां राह' मॉर्निंग क्लब, श्याम नगर (जयपुर) के सदस्य भी नियमित रूप से जोबनेर पहुंचकर आचार्य श्री के सान्निध्य में धर्मशिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। अपने प्रवचन में आचार्य श्री वर्धमान सागर जी ने समवशरण का महत्व बताते हुए कहा कि भगवान की उपदेश सभा को समवशरण कहा जाता है। यह भूतल से पांच हजार धनुष ऊपर आकाश में स्थित होता है, जिसमें चारों दिशाओं में चार द्वार तथा 20 हजार सीढ़ियां होती हैं। इसकी आठ भूमियों में आठवीं श्रीमंडप भूमि पर 12 सभाएं होती हैं और मध्य भाग की गंधकुटी में विराजमान होकर भगवान ओंकारमयी देशना प्रदान करते हैं। आचार्य श्री ने बताया कि विदेह क्षेत्र में सभी तीर्थंकरों के समवशरण की भूमि 12 योजन प्रमाण रहती है, जबकि भरत एवं ऐरावत क्षेत्र में उत्सर्पिणी काल में इसका विस्तार बढ़ता और अवसर्पिणी काल में घटता रहता है। डॉ. राजेश पंचोलिया एवं श्री मिक्की बड़जात्या ने बताया कि आचार्य श्री ने समवशरण की महिमा का वर्णन करते हुए कहा कि वहां उपस्थित जीवों की संख्या उनके बैठने योग्य स्थान से असंख्यात गुना अधिक होती है, फिर भी जिनेंद्र भगवान के प्रभाव से सभी को पर्याप्त स्थान प्राप्त होता है और कोई किसी का स्पर्श नहीं करता। उन्होंने कहा कि समवशरण में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं होता। सभी के लिए समान स्थान होने के कारण ही इसे 'समवशरण' कहा जाता है। जहां भगवान का समवशरण होता है, वहां चारों ओर चार सौ कोस तक सुभिक्ष रहता है और अकाल का भय नहीं रहता। सिंह और हिरण, सर्प और नेवला जैसे जन्मजात शत्रु भी वहां मैत्रीभाव धारण कर लेते हैं। आचार्य श्री ने आगे कहा कि समवशरण में रोग, मृत्यु, उत्पत्ति, बैर, हिंसा, कामबाधा, तृष्णा और क्षुधा की पीड़ा नहीं होती। वहां छहों ऋतुओं के फल-फूल एक साथ उपलब्ध रहते हैं। भगवान के प्रभाव से बालक से लेकर वृद्ध तक सभी जीव प्रवेश अथवा प्रस्थान करते समय अल्प समय में ही संख्यात योजन की दूरी तय कर लेते हैं। उन्होंने बताया कि समवशरण में सभी सौ इंद्र सदैव भगवान की वंदना में सिर झुकाए रहते हैं। वहां दिन और रात का कोई भेद नहीं होता तथा वहां स्थित भव्य जीव अपने सात भवों का दर्शन कर सकते हैं। समवशरण केवल तीर्थंकर भगवान का ही होता है और इसकी रचना सौधर्म इंद्र की आज्ञा से कुबेर विशेष रत्नों एवं मणियों द्वारा अंतमुर्हूर्त में करते हैं। इसमें केवल संज्ञी पंचेंद्रिय जीव ही प्रवेश करते हैं। भगवान के मोक्षगमन अथवा अन्य स्थान पर विहार करने के पश्चात समवशरण स्वतः विलीन हो जाता है।

वृद्ध एवं अशक्तजनों को सम्मान और अपनेपन की आवश्यकता

लायंस क्लब अजमेर आस्था: तीर्थराज पुष्कर स्थित अपनाघर आश्रम में 50 बुजुर्गों को कराया गया सात्विक भोजन

अजमेर. शाबाश इंडिया। लायंस क्लब अजमेर आस्था के प्रांतीय प्रमुख कार्यक्रम ''आओ खुशियां बांटें'' के अंतर्गत तीर्थराज पुष्कर स्थित अपनाघर आश्रम (बट बावड़ी गणेशजी के पास) में निवासरत 50 वृद्ध एवं अशक्तजनों को समाजसेवी जवाहर कोठारी के सहयोग तथा स्वर्गीय श्रीमती गुलाब देवी कोठारी की पुण्य स्मृति में मिष्ठान युक्त शुद्ध एवं सात्विक भोजन की सेवा प्रदान की गई। इस अवसर पर क्लब अध्यक्ष लायन मुकेश कर्णावट ने कहा कि विभिन्न परिस्थितियों के कारण अपने परिवार से दूर आश्रमों में जीवन व्यतीत कर रहे बुजुर्गों को सम्मान, स्नेह और अपनेपन की सबसे अधिक आवश्यकता होती है। समाज का दायित्व है कि वह उनके जीवन में खुशियां, आत्मीयता और अपनत्व का भाव बनाए रखे, ताकि वे स्वयं को कभी अकेला या उपेक्षित महसूस न करें। कार्यक्रम संयोजक लायन अतुल पाटनी ने बताया कि लायंस क्लब अजमेर आस्था द्वारा क्लब सदस्यों, समाजसेवियों एवं भामाशाहों के सहयोग से सामाजिक सरोकारों से जुड़े सेवा कार्य निरंतर संचालित किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि भविष्य में भी जरूरतमंदों, दीन-दुखियों, बुजुर्गों तथा जीवदया के क्षेत्र में विभिन्न सेवा गतिविधियों का नियमित आयोजन किया जाता रहेगा। कार्यक्रम के दौरान आश्रमवासियों ने भोजन सेवा के लिए सभी सहयोगकर्ताओं के प्रति आभार व्यक्त किया तथा लायंस क्लब अजमेर आस्था द्वारा किए जा रहे सेवा कार्यों की सराहना की।

आईसीसीआर में सनातनी योद्धा सम्मान समारोह का भव्य आयोजन

कोलकाता. शाबाश इंडिया। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आईसीसीआर) सभागार में सनातनी योद्धा सम्मान समारोह का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ स्वामी विशोखानंद महाराज, राज्यसभा सांसद राहुल सिन्हा, इस्कॉन के वाइस प्रेसिडेंट राधारमण दास तथा कार्यक्रम के आयोजक डॉ. अशोक पोद्दार ने भगवान जगन्नाथ के चित्र पर पुष्प अर्पित कर किया। इसके पश्चात सनातनी योद्धा सम्मान समारोह का विधिवत शुभारंभ हुआ। समारोह में राज्यसभा सांसद राहुल सिन्हा, पश्चिम बंगाल सरकार की मंत्री पूर्णिमा चक्रवर्ती, विधायक विजय ओझा, विधायक दिलीप सिंह, विधायक पापिया अधिकारी, भाजपा नेता राकेश सिंह, कानूनविद एवं भाजपा नेत्री प्रियंका टिबड़ेवाल, डॉ. शतरूपा तथा बीर बहादुर सिंह मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। इस अवसर पर कृष्ण कुमार सिंहानिया, डॉ. पारस कोचर, राजा जैन, प्रख्यात मधुमेह विशेषज्ञ डॉ. आशीष मित्रा, प्रेम मिलन के चंद्रकांत सराफ, डॉ. पी.के. हाजरा, डॉ. पीयूष द्विवेदी, अरुण सराफ, हरेंद्र दूबे, सिद्धार्थ पाण्डेय, विनीत जैन, डॉ. इन्द्रजीत तिवारी, मृगांक अग्रहरी, सीमा भावसिंहका एवं सीए रतन अग्रवाल सहित अनेक समाजसेवियों एवं विशिष्ट व्यक्तियों को सनातनी योद्धा सम्मान से सम्मानित किया गया। इसके अलावा अवध श्याम परिवार, श्याम चरण कांकुरगाछी तथा एसेन्स फाउंडेशन को भी उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए आयोजक डॉ. अशोक पोद्दार ने सनातन समाज से एकजुट होकर सनातन संस्कृति एवं उसके संरक्षण के लिए कार्य करने का आह्वान किया। कार्यक्रम के संयोजक विवेक शुक्ला ने सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों का आभार व्यक्त करते हुए सम्मानित सभी योद्धाओं को शुभकामनाएं दीं।

फागी सहित आसपास के जिनालयों में हर्षोल्लास से मनाया गया धर्मनाथ भगवान का मोक्ष कल्याणक महोत्सव

फागी. शाबाश इंडिया

फागी कस्बे सहित चकवाड़ा, चोरू, नारेड़ा, मंडावरी, मेहंदवास, निमेड़ा, लसाड़िया एवं लदाना क्षेत्र के विभिन्न जिनालयों में जैन धर्म के 15वें तीर्थंकर भगवान धर्मनाथ का मोक्ष कल्याणक महोत्सव श्रद्धा, भक्ति एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। जैन महासभा के प्रतिनिधि राजाबाबू गोधा ने बताया कि कस्बे के प्राचीन आदिनाथ जिनालय में प्रातः श्रीजी का अभिषेक एवं सामूहिक शांतिधारा संपन्न हुई। इसके पश्चात श्रद्धालुओं ने अष्टद्रव्यों से पूजन-अर्चन कर देश की सर्वोच्च साध्वी गणिनी आर्यिका ज्ञानमती माताजी, विशुद्धमती माताजी, श्रुतमती माताजी, सुबोधमती माताजी तथा आचार्य वर्धमान सागर जी महाराज, समाधिस्थ आचार्य विद्यासागर जी महाराज, आचार्य गुणसागर जी महाराज सहित विभिन्न पूर्वाचार्यों को अर्घ्य समर्पित किए। इसके उपरांत भगवान धर्मनाथ के मोक्ष कल्याणक के उपलक्ष्य में श्रद्धापूर्वक निर्वाण लाडू चढ़ाकर विश्व शांति, सुख-समृद्धि एवं मंगल की कामना की गई। समाज की मनभर कासलीवाल एवं मंजू छाबड़ा ने बताया कि भगवान धर्मनाथ जैन धर्म के 15वें तीर्थंकर थे। उनका जन्म इक्ष्वाकु वंश के राजा भानु एवं रानी सुव्रता के यहां हुआ था। उनका जीवन आत्मा की संस्कारिक वासनाओं पर विजय का प्रतीक माना जाता है। उन्होंने सभी जीवों के प्रति अहिंसा, करुणा एवं सद्भाव का संदेश दिया। कार्यक्रम में कैलाश कासलीवाल, ओमप्रकाश कासलीवाल, राजेश छाबड़ा, शांतिलाल मित्तल, शिखर गंगवाल, ललित कासलीवाल, एडवोकेट रवि जैन, कालू कासलीवाल,

राजाबाबू गोधा, संतरा चौधरी, कमला कासलीवाल, चित्रा गोधा, मनभर कासलीवाल, मंजू छाबड़ा, रेखा मित्तल, मनीषा कासलीवाल, सीमा कासलीवाल, अंकिता गंगवाल, मनीषा कड़ीला सहित बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित रहीं। **राजाबाबू गोधाः मीडिया प्रवक्ता, जैन महासभा, राजस्थान**

आर्यिका अर्हंश्री माताजी ससंघ का मांग्यावास में भव्य मंगल प्रवेश

21 जून को होगा चातुर्मास उद्घोषणा महोत्सव

जयपुर. शाबाश इंडिया

आचार्य विभवसागर मुनिराज की परम प्रभावक शिष्या, सम्यक्त्व-वर्धिनी, भक्तामर साधिका एवं जिनधर्म प्रभाविका आर्यिका अर्हंश्री माताजी ससंघ का बुधवार प्रातः श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, मंगल विहार (गोपालपुरा बाईपास) से श्री मुनिसुव्रतनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, मांग्यावास (मानसरोवर) के लिए मंगल विहार हुआ। विहार के दौरान श्रद्धालुओं ने विभिन्न स्थानों पर माताजी ससंघ का पाद-प्रक्षालन कर धर्मलाभ प्राप्त किया। मांग्यावास जैन समाज द्वारा माताजी ससंघ के आगमन पर भव्य स्वागत किया गया। समाज के सदस्यों ने बैंड-बाजों के साथ मंगल अगवानी करते हुए आर्यिका संघ का श्री मुनिसुव्रतनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में भव्य मंगल प्रवेश कराया। मंदिर पहुंचने पर जिनेन्द्र भगवान के दर्शन के पश्चात धर्मसभा का आयोजन किया गया।

धर्मसभा को संबोधित करते हुए आर्यिका अर्हंश्री माताजी ने आगामी श्रुत पंचमी महापर्व के महत्व पर प्रकाश डालते हुए सभी श्रद्धालुओं से जिनवाणी के नियमित अध्ययन का आग्रह किया। उन्होंने श्रुत पंचमी के अवसर पर जिनवाणी माता को विशेष रूप से सजाने तथा ज्ञान आराधना के प्रति जागरूक रहने का संदेश भी दिया। मांग्यावास दिगम्बर जैन मंदिर प्रबंध समिति के अध्यक्ष प्रकाशचंद जैन सोगानी ने बताया कि श्रुत पंचमी के उपलक्ष्य में ''जिनवाणी सजाओ प्रतियोगिता'' का आयोजन किया जाएगा तथा जिनवाणी माता की भव्य शोभायात्रा भी निकाली जाएगी। उन्होंने बताया कि आर्यिका अर्हंश्री माताजी ससंघ का मांग्यावास में पांच दिवसीय प्रवास रहेगा, जिसके दौरान प्रतिदिन विभिन्न धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित होंगे। उन्होंने आगे बताया कि 21 जून को प्रातः 8 बजे चोपड़ा मैरिज गार्डन में चातुर्मास उद्घोषणा महोत्सव धूमधाम से आयोजित किया जाएगा, जहां आर्यिका अर्हंश्री माताजी आगामी चातुर्मास की घोषणा करेंगी। कार्यक्रम में समाजसेवी सुचित जैन ने बताया कि धर्मसभा में पी.सी. जैन सोगानी, जयप्रकाश जैन, दिनेश गंगवाल, मनोज चौधरी, बबीता गोधा, हर्षा सेठी, रजनी पाटनी, बीना सोगानी सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे। इसके अतिरिक्त वरुण पथ जैन समाज, मंगल विहार जैन समाज, प्रताप नगर जैन समाज, शक्ति नगर जैन समाज, इमलीवाला फाटक जैन समाज तथा जयपुर के विभिन्न जैन मंदिरों एवं समाजों के पदाधिकारी एवं समाजश्रेष्ठी भी कार्यक्रम में शामिल हुए। सभी अतिथियों का स्वागत मांग्यावास जैन समाज द्वारा किया गया।

-राजाबाबू गोधा
मीडिया प्रवक्ता, जैन महासभा, राजस्थान

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में तीन दिवसीय योग अभ्यास शिविर का शुभारंभ

अजमेर. शाबाश इंडिया। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस (21 जून) के उपलक्ष्य में राजकीय सेटेलाइट चिकित्सालय, आदर्श नगर में तीन दिवसीय योग अभ्यास शिविर का शुभारंभ गुरुवार को हुआ। यह शिविर 18 जून से 20 जून 2026 तक आयोजित किया जा रहा है। प्रथम दिवस प्रातः 7 बजे से 8 बजे तक योगाभ्यास सत्र का आयोजन किया गया। योग सत्र का संचालन डॉ. गरिमा अरोरा, श्रीमती राज एवं श्री मनोज ने किया। उन्होंने चिकित्सालय के चिकित्सकों, नर्सिंग अधिकारियों एवं पैरामेडिकल कार्मिकों को विभिन्न योगासन, प्राणायाम तथा ध्यान संबंधी अभ्यास कराए और योग के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले सकारात्मक प्रभावों की विस्तृत जानकारी दी। कार्यक्रम में चिकित्सालय के चिकित्सकों, नर्सिंग स्टाफ एवं पैरामेडिकल कर्मियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए योगाभ्यास किया। प्रतिभागियों ने नियमित योग को स्वस्थ जीवनशैली का महत्वपूर्ण आधार बताते हुए इसे दैनिक दिनचर्या का हिस्सा बनाने का संकल्प लिया। इस अवसर पर राजकीय सेटेलाइट चिकित्सालय के अधीक्षक डॉ. जी.सी. मीणा, उपाधीक्षक डॉ. नरेंद्र महावर, डॉ. गविश लखीवाल, श्रीमती संध्या श्रीवास्तव सहित चिकित्सालय का नर्सिंग एवं पैरामेडिकल स्टाफ उपस्थित रहा। उल्लेखनीय है कि यह योग शिविर आगामी दो दिनों तक निरंतर संचालित रहेगा तथा इसका समापन 20 जून 2026 को होगा। चिकित्सालय प्रशासन द्वारा सभी कार्मिकों को योग के माध्यम से स्वस्थ, संतुलित एवं सकारात्मक जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित किया जा रहा है।

मुनि श्री विलोकसागर जी महाराज ससंघ का आज होगा भव्य मंगल प्रवेश

श्रुत पंचमी महोत्सव उनके पावन सानिध्य में श्रद्धापूर्वक मनाया जाएगा

जयपुर. शाबाश इंडिया। परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज, आचार्य श्री आर्जव सागर जी महाराज एवं नवाचार्य समयसागर जी महाराज के आज्ञानुवर्ती शिष्य मुनि श्री विलोकसागर जी महाराज एवं मुनि श्री विबोधसागर जी महाराज ससंघ का शुक्रवार प्रातः जैन नसियां जी में भव्य मंगल प्रवेश होगा। जानकारी के अनुसार मुनि संघ ने गुरुवार सायंकाल सोहेला जैन मंदिर से विहार कर पॉलिटेक्निक कॉलेज, बनास पुलिया के समीप रात्रि विश्राम किया। इसके पश्चात शुक्रवार प्रातः 5 बजे वहां से विहार प्रारंभ कर छावनी बस स्टैंड एवं बड़े कुए के मार्ग से होते हुए प्रातः 7 बजे जैन नसियां जी में मंगल प्रवेश करेंगे। मुनि श्री विलोकसागर जी महाराज एवं मुनि श्री विबोधसागर जी महाराज ससंघ के पावन सानिध्य में श्रुत पंचमी महोत्सव श्रद्धा, भक्ति एवं उल्लास के साथ मनाया जाएगा। आयोजन समिति ने सभी श्रद्धालुओं एवं धर्मप्रेमी बंधुओं से अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर धर्मलाभ प्राप्त करने की अपील की है।

प्रशिक्षण शिविर भविष्य के प्रोफेशन की प्रथम सीढ़ी हैं: बसंत जैन बैराठी

जयपुर. शाबाश इंडिया

आत्मनिर्भर महिला मंच की ओर से आयोजित 25 दिवसीय निशुल्क ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर का समापन समारोह साइंस पार्क में रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के साथ संपन्न हुआ। समारोह में नृत्य, फैशन परेड सहित विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने सभी का मन मोह लिया।

समारोह के मुख्य अतिथि एवं प्रसिद्ध समाजसेवी बसंत जैन बैराठी ने कहा कि ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर महिलाओं और विद्यार्थियों के लिए भविष्य के प्रोफेशन की प्रथम सीढ़ी साबित होते हैं। ऐसे शिविरों में मेहंदी, सिलाई, सौंदर्य प्रसाधन, नृत्य, योग सहित विभिन्न विधाओं का प्रशिक्षण प्राप्त कर महिलाएं और छात्राएं भविष्य में इन्हें स्वरोजगार एवं व्यवसाय के रूप में अपनाकर आत्मनिर्भर बन सकती हैं। कार्यक्रम में श्री अग्रसेन कल्याण बोर्ड, राजस्थान के प्रथम अध्यक्ष राकेश कुमार गुप्ता एवं भाजपा नेता विष्णु जायसवाल सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। संस्था के संरक्षक मंगल अग्रवाल एवं संस्थापिका-अध्यक्ष माधवी अग्रवाल ने बताया कि 25 दिवसीय शिविर में 500 बालिकाओं एवं महिलाओं ने विभिन्न गतिविधियों का प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर में प्रशिक्षकों ने अपनी सेवाएं पूर्णतः निशुल्क प्रदान कीं। मेहंदी एवं ब्यूटीशियन का प्रशिक्षण कविता त्यागी, डांस का धर्मेश्वर सर, सिलाई का उर्मिला पारीक, इंग्लिश का नंदिनी जैन, सेल्फ डिफेंस का मुस्कान सैनी, ड्राइंग का प्रियांशी शर्मा तथा योग का प्रशिक्षण मंजू योगी एवं राधा महेश्वरी ने दिया। इसके अलावा रिंकू, रिमिषा लालवानी, दीपा धनोपिया एवं कनिष्क अग्रवाल सहित अन्य प्रशिक्षकों ने भी विभिन्न कलाओं का प्रशिक्षण प्रदान किया। समारोह के दौरान सरस्वती प्रिंटिंग इंडस्ट्रीज एवं विश्व प्रसिद्ध लेडीज पर्स व गिफ्ट आइटम निर्माता कंपनी 'कलांकित' के चेयरमैन बसंत जैन बैराठी द्वारा उत्कृष्ट सेवाएं देने वाले प्रशिक्षकों को प्रशस्ति-पत्र एवं दुपट्टा पहनाकर सम्मानित किया गया। वहीं सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र तथा विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता विद्यार्थियों को ट्रॉफी प्रदान की गई। अंत में संस्था की अध्यक्ष माधवी अग्रवाल ने सभी अतिथियों, प्रशिक्षकों, अभिभावकों एवं विद्यार्थियों का आभार व्यक्त करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

10 दिवसीय आर्ट रेजिडेंसी में देश के चुनिंदा 13 कलाकारों के साथ किया सृजन, राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने कला शैली पर की विशेष चर्चा

उदयपुर. शाबाश इंडिया

झीलों की नगरी उदयपुर के लिए गर्व का क्षण तब आया जब शहर के वरिष्ठ चित्रकार एवं कला विशेषज्ञ डॉ. निर्मल यादव को राष्ट्रपति भवन में भारत की महामहिम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु द्वारा कला क्षेत्र में उनके विशिष्ट योगदान के लिए सम्मानित किया गया। राष्ट्रपति ने उन्हें स्मृति चिह्न एवं शॉल भेंट कर सम्मान प्रदान किया। राष्ट्रपति भवन में 4 जून से 14 जून तक आयोजित प्रतिष्ठित 10 दिवसीय आर्ट रेजिडेंसी में देशभर से चयनित मात्र 13 कलाकारों को आमंत्रित किया गया था। इस विशेष आयोजन का उद्देश्य विभिन्न कला विधाओं में कार्य कर रहे कलाकारों के अनुभव, दृष्टिकोण और सृजनशीलता को एक साझा मंच प्रदान करना था। डॉ. निर्मल यादव को उनकी बहुआयामी कलात्मक विशेषज्ञता के कारण इस रेजिडेंसी का हिस्सा बनने का अवसर मिला। डॉ. यादव की पहचान केवल एक चित्रकार के रूप में नहीं, बल्कि विविध कला शैलियों और माध्यमों में दक्ष कलाकार के रूप में है। उन्होंने लघुचित्र शैली, रियलिज्म, कंटेम्परेरी आर्ट, कॉन्सेप्चुअल आर्ट, हेरिटेज रेस्टोरेशन, एस्थेटिक डिजाइन, स्टोरीबोर्ड इलस्ट्रेशन, टेक्सचर आर्ट, वॉल आर्ट और संयोजन कला जैसे क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य किया है। वहीं वॉटर कलर, टेम्परा, ऑयल कलर, चारकोल और पेन ड्राइंग सहित विभिन्न माध्यमों पर उनकी मजबूत पकड़ उन्हें विशिष्ट बनाती है। रेजिडेंसी के समापन अवसर पर आयोजित प्रदर्शनी में कड़े सुरक्षा प्रोटोकॉल के बावजूद राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने कलाकारों से व्यक्तिगत रूप से संवाद किया। उन्होंने डॉ. यादव से उनकी कलाकृतियों, रचनात्मक सोच और विशिष्ट शैली के बारे में विस्तार से जानकारी ली। कलाकार और राष्ट्रपति के बीच हुआ यह संवाद डॉ. यादव के लिए अविस्मरणीय अनुभव रहा। सम्मान स्वरूप प्रदान किए गए स्मृति चिह्न में राष्ट्रपति भवन की भव्य इमारत को 24 कैरेट गोल्ड प्लेटिंग के साथ उकेरा गया है, जो इस सम्मान की विशिष्टता को दर्शाता है। इस अवसर पर डॉ. निर्मल यादव ने भी अपनी कला-साधना का प्रतीक स्वरूप राष्ट्रपति को मेवाड़ की प्रसिद्ध लघुचित्र शैली में निर्मित एक विशेष चित्र भेंट किया। यह सम्मान न केवल डॉ. निर्मल यादव की व्यक्तिगत उपलब्धि है, बल्कि उदयपुर की समृद्ध कला परंपरा और रचनात्मक विरासत को राष्ट्रीय स्तर पर मिली एक महत्वपूर्ण पहचान भी है।

> “रेजिडेंसी के समापन अवसर पर आयोजित प्रदर्शनी में कड़े सुरक्षा प्रोटोकॉल के बावजूद राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने कलाकारों से व्यक्तिगत रूप से संवाद किया। उन्होंने डॉ. यादव से उनकी कलाकृतियों, रचनात्मक सोच और विशिष्ट शैली के बारे में विस्तार से जानकारी ली। कलाकार और राष्ट्रपति के बीच हुआ यह संवाद डॉ. यादव के लिए अविस्मरणीय अनुभव रहा।”

रिपोर्ट: राकेश शर्मा 'राजदीप'